डॉ. गया प्रसाद कटियार : बम गुरु

(20 जून 1900 - 10 फरवरी 1993)
(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

आभार : क्रांति कटियार
सुगत सांस्कृतिक शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ,(उ.प्र.) – 20.06.2021
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए के सिंह
मोबा : 7355175480

बंधुओं : जय संविधान, जय विज्ञान, जय लोकतंत्र, जय भारत, नमो बुद्धाय, जय भीम, जय अर्जक, जय जीवी समाज...

.....

भारत के स्वतन्त्रता सेनानी एवं प्रखर क्रांतिकारी, डॉ.गया प्रसाद कटियार का जन्म, बिल्हौर क्षेत्र के गांव खजूरी खुर्द, जिला-कानपुर, उत्तर प्रदेश, में 20 जून 1900 को हुआ था।

डॉ. गया प्रसाद कटियार के दादा महादीन कटियार ने 1857 की क्रांति में हिस्सा लिया था। दादा की कहानियां सुन-सुनकर डॉ. गयाप्रसाद के अंदर भी अंग्रेजों के प्रति नफरत भर गई थी। वे गरम दल से जुड़े और जल्द ही भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु के प्रिय मित्र भी बन गए। वे कई शहरों में दवाखाना चलाते थे, और इन्हीं दवाखानों के अंदर बम तैयार किए जाते थे। अंग्रेजों के कान खोलने के लिए भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने संसद भवन के बाहर जो बम फेंके थे, वे भी डॉ. गया प्रसाद कटियार की देखरेख में बने थे।

1921 के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया, बाद में वे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन ऐसोसिएशन (H.S.R.A.) में सम्मिलित हो गये। इस प्रकार वे चन्द्रशेखर आजाद और सरदार भगत सिंह आदि देश के शीर्षस्थ क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आ गये। साण्डर्श वध की योजना, सिक्ख भगतसिंह के केश व दाढी काटने, H.S.R.A. के गुप्त केंद्रीय कार्यालयों का संचालन करने सहित, दिल्ली की पार्लियामेंट में फेंके गए बम निर्माण आदि

कार्यों में अपना सक्रिय रुप से योगदान देते हुए अंततः 15 मई 1929 को सहारनपुर बम फैक्ट्री का संचालन करते हुए गिरफ्तार कर लिया गया। और उन्हें देश के सुप्रसिद्ध लाहौर षड्यंत्र केस में दिनांक 7 अकटूबर 1930 को आजीवन कारावास की सजा दी गई | लाहौर की जेल में उन्होंने अन्य बन्दियों के साथ 63 दिन की भूख हड़ताल की। बाद में उन्हें अण्डमान की सेल्यूलर जेल [काला पानी] ले जाया गया। वहाँ भी उन्होने 46 दिन भूख हड़ताल की। अन्तत: लगातार 17 वर्षों के लंबे जेल जीवन में कई अमानवीय यातनाओं को सहने के बाद वे बिना शर्त जेल से मुक्त किये गये। स्वतंत्र भारत में भी उन्हें शोषित-पीड़ित जनता के लिए संघर्षरत होने के कारण 2 वर्षों तक जेल में रहना पड़ा।

शहीद-ए-आजम भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने भरी असेंबली में बम फेंक कर अंग्रेजी हुकुमत की जड़ें हिला दी थीं। लेकिन बहुत कम लोग ही जानते हैं, कि उन्हें ये बम अपने क्रांतिकारी साथी डॉ. गया प्रसाद कटियार की देखरेख में बनाए थे। क्रांतिकारी डॉ गया प्रसाद कटियार ने अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन में उन्होंने मोर्चा लिया था। सहारनपुर में बम फैक्ट्री चलाते हुए पकड़े जाने के बाद लाहौर साजिश मामले में उन्हें आजीवन काला पानी की सजा हुई थी। उनकी याद में केंद्र सरकार ने 26 अप्रैल 2016 को पांच रुपये का डक टिकट भी जारी किया था।

सहारनपुर में बम फैक्ट्री चलाते पकड़े गए

लाला लाजपत राय की हत्या के जिम्मेदार अंग्रेज पुलिस अधिकारी सांडर्स की हत्या के बाद 15 मई 1929 को उन्हें सहारनपुर में बम फैक्ट्री चलाते हुए गिरफ्तार कर लिया गया। वे 21 फरवरी 1946 को रिहा किए गए। डॉ. कटियार के बेटे क्रांति कटियार बताते हैं, कि कानपुर, लाहौर, रावलपिंडी, लखनऊ आदि जेलों में 17 साल रहे। अंडमान-निकोबार द्वीप की सेल्युलर जेल में सात साल रहे। लाहौर जेल में 65 दिन अनशन भी किया। 10 फरवरी 1993 को वे इस दुनिया से विदा हो गए।

भारतवर्ष के महान् सपूत को विनम्र श्रद्धांजलि और शत्-शत् नमन्.....

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

-:समाप्त:-

लेखक : ए. के. सिंह 7355175480